निराला की कविताओं में सौदर्यानुभूति

डॉ. आर.पी. वर्मा
एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

किसी भी कवि की सौंदर्यानुभूति उसकी भावानुभूति से जुड़ी होती है। कविता भावनाओं का प्रबल प्रवाह है। जब कवि की कल्पना सतरंगी सपनों में विचरण करती है तो सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव भी यथार्थता का रंग लेकर ढल पड़ते हैं। कवि का आंतरिक सौंदर्य, पीड़ा, कटुता, संवेदनात्मक इत्यादि भाव ब्रहम हाते हैं, तब एक ऐसी कविता का जन्म होता है, जो मानव–मन की गहराइयों को छूती हुई कहीं के आर–पार निकल जाती है।

कविवर निराला साहित्य–जगत् में एक ऐसा नाम है, जो आगे आने वाले कवियों एवं लेखकों में सदैव अग्रणी रहेगा। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कहीं 'हिम्मतशील' कहीं 'वहिज्वाला'–होते हैं और ऐसी जैसे उपमा केवला उन्हीं को ही दी जा सकती है। समाज की विषमताओं से जलते हुए कवि यदि कह उठे–

लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर

हारता रहा मैं स्वार्थ–समर

तो अतिशयोक्ति नहीं। कोई कवि ऐसे ही विक्षिप्ति नहीं होता है। आखिर क्या कारण था कि उन्हें कहना पड़ा–

ये कान्यकुब्ज–कुल कुलांगार

खाकर पत्तल में करें छेद,

इनके कर कन्या, अर्थ खेद

इस विषय–बेलि में विष ही फल

यह दग्ध मरुस्थल–नहीं सुजल

'निराला' की सौंदर्यानुभूति सम्पूर्ण जगत् के असीम सौंदर्य का भंडार है।

एक तरफ सृष्टि–स्रष्टा ने ऐसे अनुपम एवं आकर्षक सौंदर्य की सृष्टि की है, जो हमें हर जगह दृष्टिगोचर होता है, दूसरी तरफ कविवर 'निराला' ने अपनी कविताओं में ऐसे सौंदर्य की अभिव्यक्ति की है कि पाठक उन्हें पढ़कर आनंद–विभोर हो उठता है। मानव–मन ऐसा चंचल है कि पावस ऋतु की काली घटाओं को देख नाच उठता है, तो शरद् ऋतु की चाँदनी देखकर प्रफुल्लित हो उठता है। कवि 'निराला' का सौन्दर्य इसी प्रकार का सौंदर्य है। यह सौंदर्य पाठक को हँसाता है, आनंद–विभोर करता है, विक्षुब्ध करता है और उसके हृदय को स्पंदन से भर देता है। कवि की इस सहज सौंदर्यानुभूति से पाठक ऐसे ही आकर्षित एवं प्रभावित होता है, जैसे चकोर बादल को देखकर आकर्षित हो उठता है। निराला की कविताओं में सौंदर्यानुभूति के तीन रूप मिलते हैं–रूप सौंदर्यानुभूति, भाव सौंदर्यानुभूति तथा कर्म–सौंदर्यानुभूति। रूप सौन्दर्य में कवि ने मानवीय रूप–सौंदर्यानुभूति को लिया है। निर्जन वन की वल्लरी पर खिली जूही की कली मात्र पुष्पिका नहीं, कवि के लिए वह एक ऐसी थकी कोमलांगी है, जो अपने प्रिय की स्मृति में पत्रांक में सोई है ताा अपने प्रिय का स्मरण कर रही है। भाव–सौंदर्य में कवि ने आंतरिक सौंदर्य का निरूपण किया है। कर्म–सौंदर्य के लिए कवि ने क्रियाशील एवं

भव्यात्मक सौन्दर्य का प्रतिपादन किया है। कविवर 'निराला' की कविताओं में सौंदर्यानुभूति के विभिन्न रूपों को इस प्रकार देखा जा सकता है–

मानवीय रूप–सौदर्यानुभूति

कविवर 'निराला' की कविताओं में मानवीय सौंदर्यानुभूति की अनेकानेक मधुरतम झाँकियों अंकित हैं। साहित्य में नारी–सौंदर्य को सदैव अक्षुण्ण माना जाता रहा है। कवि 'निराला' को प्रकृति कहीं प्रेमयुक्त प्रेमिका के रूप में दिखाई देती है तो कहीं विग्दधा नायिका के रूप में। 'संध्या–सुंदरी' कविता कवि की दृष्टि में आसमान से उतरती परी के समान है–

दिवसावसान का समय,

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या–सुंदरी परी–सी

धीरे धीरे धीरे।

'जूहीकी कली' कविता एक ऐसी सुकुमार एवं कमनीय नारी की झाँकी प्रस्तुत करती है, जो आसमान से उतरती अप्सरा –सी नहीं बल्कि, अमल–कोमल तरूणी–सी दृष्टिगोचर होती है। यह सुहागभरी नारी मानव–मन को गहरी ऊष्मा एवं आत्मीयता से भर देती है।

आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,

आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात

आई याद कांता की कंपित कमनीय गात।

कवि मात्र प्रकृति में ही नारी–सौंदर्य नहीं देखते, बल्कि नारी का सूक्ष्म सौंदर्य विश्लेषण भी करते हैं–

काँपा कोमलता पर सस्वर

ज्यों मालकौश नव वीणा पर,

नैश स्वप्न ज्यों तू मंद–मंद

फूटी ऊषा जागरण छंद।

नारी ही नहीं, पुरूष सौंदर्य भी कवि की दृश्टि से छूटा नहीं है–

रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत–चरण

श्लय धनु–गुण है, कोटि–बंध स्रस्त–तुणीर–धरण,

दृढ़ जटा–मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल

फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर विपुल।

कम शब्दों द्वारा ज्यादा सौंदर्य–चित्र शब्दबद्ध करना कवि 'निराला' की विशेषता है। कवि का मानवीय सौंदर्य अद्वितीय, अनुपम, अलौकिक, असाधारण एवं विलक्षण है।

वस्तु–सौंदर्य रूप–सौंदर्यानुभूति के ही चित्रण में झलकता है। कवि की यह विशेषता होती है कि वह वस्तुओं का यथार्थ एवं मनोहरी चित्रण कर पाठकों के हृदय में उनके भव्य रूप की छाप अंकित कर देता है। 'राम की शक्तिपूजा' का वस्तु–सौंदर्य देखिए–

है अमा–निशा, उगलता गगन घन अंधकार,

खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन–चार,

अप्रितहत गरज रहा पीछे, अंबुधि विशाल,

भूधर ज्यों ध्यान–मग्न, केवल जलती मशाल।

इसी रूप सौंदर्यानुभूति में प्राकृतिक सौंदर्य का भी निरूपण किया जाता है। कवि क लिए प्रकृति न होकर प्रकृति–सुंदरी बन जाती है। छायावादी कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण ही कर दिया है। कवि 'निराला' के लिए प्रकृति–अनुराग परिपूर्ण नारी है–

(प्रिय) यामिनी जागी।

अलस पंकज–दृग अरूण–मुख

तरूण–अनुरागी।

कवि कहते हैं–

हरियाली ने, अलि, हर ली श्री

अखिल विश्व के नव यौवन की,

मंद–गंध कुसुमों में लिख दी

लिपि जय की हँसके।

'जूही की कली' और 'संध्या–सुंदरी–जैसी कविताएँ कामिनी की कमनीयता एवं सौंदर्य का निरूपण करती है। निराला प्रकृति के कण–कण में सौंदर्य के दर्शन करते हैं–

यमुने, तेरी इन लहरों में

किन अधरों की आकुल तान

पथिक–प्रिया सी जगा रही है

उस अतीत के नीरव गान?

इस प्रकार कवि ने प्रकृति के आलंबन उद्दीपन दोनों रूपां का चित्रण किया है। कही तारों से सुसज्जित मधुर यामिनी का चित्रण है तो कहीं आकाश से उतरती संध्या–सुन्दरी का शब्दावतरण है। 'बादल', 'वसनवासंती लेगी', 'घन वेल', 'आए घन पावस के', यमुना के प्रति', 'संध्या–सुंदरी', 'जूही की कली'–जैसी प्रकृतिपरक कविताएँ कविवर 'निराला' के प्रकृति–प्रेम को दर्शाती हैं।

भाव–सौंदर्यानुभूति

भाव–सौंदर्यानुभूति की छटा निराला की कविताओं को एक ऐसा सौंदर्य प्रदान करती है, जो पाठकों के मन को आहलादकारी बनाती है। स्मृति, हर्ष, निराशा, वेदना, चिन्ता, उत्साह, विषाद, दैन्य, विक्षुब्धता–जैसे मनोभाव कवि की कविताओं में दिखाई देते हैं। राम के नेत्रों में सीता के राममय नेत्रों का खिंच जाना स्मृति–भाव का सुन्दर उदाहरण है–

खिंच गए दृगों में सीता के राममय नयन।

यही नहीं, जूही की कली रूपी नायिका भी अपने प्रिय की स्मृति में खो जाती है–

आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात;

आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,

आई याद कांता की कंपित कमनीय गात।

युद्ध के पश्चात् शिविर की ओर लौटती दोनों सेनाओं की भिन्न मनः स्थितियाँ देखिए। एक ओर राक्षसवाहिनी है, जो हर्षोल्लास से भरी है–

लौटे युग दल। राक्षस–पद तल पृथ्वी टलमल,

बिंध महोल्लास से बार–बार आकाश विकल।

दूसरी ओर वानर–सेना है, जो निराशा और वेदना से भरी है–

वानर–वाहिनी खिन्न, लख

निज–पति–चरण–चिन्हन।

चल रही शिविर की ओर स्थविर–दल ज्यों विभिन्न।

इस पराजय से लक्ष्मण की चिंता स्वाभाविक है–

प्रशमित है वातावरण नमित मुख–सांध्य कमल

लक्ष्मण चिंता पल पीछे वानर–वीर सकल।

राम के मन का विषाद बड़े ही प्रभावशाली ढंग से चित्रित करते हैं–

है अमा–निशाः उगलता गगन घन अंधकार,

खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन–चार,

अप्रतिहत गरज रहा पीछे, अंबुधि विशाल,

भूधर ज्यों ध्यान–मग्न, केवल जलती मशाल।

यही नहीं, निराला की कविताओं में चपलता, घृणा, ग्लानि, आवेग, मोह, शंका, मद, व्याधि, उन्माद, त्रास इत्यादि अनेकानक भावों का सजीव एवं यथार्थ चित्र खींचा गया है। भाव–सौंदर्यानुभूति की मनोरम झाँकियों कवि की कविताओं के प्राण हैं।

कर्म–सौंदर्यानुभूति

कर्म–सौंदर्यानुभूति कविता को तेज एवं ओज से भर देती है। राम एवं रावण के बीच होने वाला समर नर–वानर का राक्षस से समर नहीं, बल्कि धर्म एवं अधर्म का युद्ध है–

यह नहीं रहा नर–वानर का राक्षस रण।

जनता की सेवा को सच्ची सेवा मानते हुए कवि कहता है–

जनता की सेवा का व्रत मैं लेता अभंग;

करता प्रचार

मंच पर खड़ा हो साम्यवाद इतना उदार।

जब कर्म करने पर भी कुछ नहीं मिलता तो मन में आक्रोश उत्पन्न होना स्वाभाविक है–

लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर

हारता रहा मैं स्वार्थ–समर

कर्मरत नारी का सौंदर्य कवि की दृष्टि से छिप नहीं पाया और वह कह उठे–

वह तोड़ती पत्थर;

कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;

श्याम तन, भर बँधा यौवन

नत नयन, प्रिय–कर्म–रत मन,

गुरू हथौड़ा हाथ,

करती बार–बार प्रहार।

कर्म मानव की थाती नहीं। प्रकृति को भी कर्म में लीन होना है। कवि 'घन' से भी कर्मरत होने को कहता है–

घन, गर्जन से भर दो वन

तरू–तरू पादप–पादप–तन

गरजो हे मंद्र, वज्र–स्वर

थर्राये भूधर–भूधर

झरझर झरझर धारा झर

पल्लव–पल्लव पर जीवन!

कविवर 'निराला' की कई कविताओं में कर्म–सौंदर्य का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। भाव–सौंदर्यानुभूति, रूप–सौंदर्यानुभूति एवं कर्म–सौंदर्यानुभूति के गहन भाव बड़ी सूक्ष्मता के साथ कवि की कविताओं में दृष्टिगोचर होते हैं।

निराला भले ही हमारे बीच नहीं हैं, किंतु आज भी उनका ओजस्वी स्वर उनकी कविताओं के माध्यम से पाठकों के मन में गूँज रहा है। इस अद्भुत शिल्पी का संपूर्ण साहित्सत्रय विश्व–साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जीवनभर संघर्ष करते हुए कवि इतना ही कह पाता है–

सोचा है नत हो बार–बार

या हिंदी का स्नेहोपहार,

यह नहीं हार मेरी, भास्वर

यह रत्नाहार–लोकोत्तर वर।

संदर्भ

- निराला सृजन सीमांत–अर्चना वर्मा।
- महाप्राण निराला–गंगा प्रसाद पाण्डेय।
- निरालाः आत्महंता आस्था–दूधनाथ सिंह।
- निरालाः कृति के साक्षात्कार–नंदकिशोर नवल।
- निराला और मुक्तिबोधः चार लम्बी कविताएँ–नंदकिशोर नवल।
- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास–रामकुमार वर्मा।
- निराला साहित्य साधना : भाग–1, भाग–2, भाग–3–रामविलास शर्मा।
- निराला–रामविलास शर्मा।
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास–रामस्वरूप चतुर्वेदी।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास–रामस्वरूप चतुर्वेदी।
- हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास–लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय।
- हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–विजयपाल सिंह।
- निराला साहित्य में प्रतिरोध के स्वर–विवेक निराला।
- निराला–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी।
- निराला का गीत काव्य–संध्या सिंह।

Copyright © 2018, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.